3

अलंकार

हमारे हिन्दुस्तानी संगीत में स्वर साधना की अनेक विधियाँ बताई गई हैं। जिनमें से 'सा' साधना, 'आ' साधना, 'ओमकार' साधना तथा इनके साथ-साथ अलंकारों की साधना को भी विशेष रूप से प्रबलता दी गई है। 'अलंकार' का अर्थ 'आभूषण' है। विद्वानों ने उसकी परिभाषा इस प्रकार दी है कि कुछ नियमित वर्णों के समुदाय अलंकार बन जाते हैं। उनको भी आरोह-अवरोह आदि वर्णों की आवश्यकता होती है। प्रचार में गुणीजन अलंकारों को 'पलटों' की संज्ञा भी देते हैं। उदाहरण स्वरूप अलंकार निम्नलिखित हैं, जिन्हें साथ में दिये गये सी.डी. पर सुना जा सकता है।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी :

- स्वरों के अरोही एवं अवरोही क्रम का वर्णन कर सकेंगे;
- उल्लेखित अलंकारों को गा पायेंगे;
- आरोही एवं अवरोही क्रम को उचित रूप से लिख पायेंगे।

अलंकारों को नीचे दिया गया है।

(1) आरोहात्मक क्रम–

सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

(2) आरोहात्मक क्रम–

सासा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सासां।

अवरोहात्मक– सांसां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सासा।

(3) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा।

(4) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.1

खाली जगह भरें

1. हिन्दुस्तानी संगीत में ..... साधना की अनेक विधियाँ बताई गई हैं।
2. अलंकार का अर्थ ..... है।
3. प्रचार में गुणीजन अलंकारों को ..... की संज्ञा भी देते हैं।

---

(5) आरोहात्मक क्रम–

सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां,

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे, प म ग रे सा।

(6) आरोहात्मक क्रम–

सा ग, रे म, ग प, म ध, प नि, ध सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा।

(7) आरोहात्मक क्रम–

सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा।

(8) आरोहात्मक क्रम–

सा रे सा ग, रे ग रे म, ग म ग प, म प म ध, प ध प नि, ध नि ध सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां नि सां ध, नि ध नि प, ध प ध म, प म प ग, म ग म रे, ग रे ग सा।

(9) आरोहात्मक क्रम–

सा, रे सा, ग रे, म ग, प म, ध प, नि ध, सां नि, रें सां।

अवरोहात्मक क्रम–

सां रें, नि सां, ध नि, प ध, म प, ग म, रे ग, सा रे, नि़ सा।

इन अलंकारों का अभ्यास आकार में भी किया जाना चाहिए तथा कंठ की तैयारी के उपरांत इन्हें समयानुसार लय को बढ़ा-बढ़ाकर प्रतिदिन किया जाना चाहिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.2

1. स र ग म, प ध नि सां को अवरोहात्मक क्रम से लिखिए।
2. सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसा को अवरोहात्मक क्रम में लिखिए।
3. निम्नलिखित स्वरों को आरोही क्रम से लिखिए।

   सांनिध, नि ध प

आपने क्या सीखा

1. अलंकार वह प्रक्रिया है, जिसका प्रयोग बार-बार अभ्यास के लिए किया जाता है।
2. अलंकार का अर्थ है आभूषण।
3. अलंकारों को पल्टा भी कहते हैं।
4. आरोह तथा अवरोह को उचित क्रम में लिखना।

पाठांत प्रश्न

1. अलंकार के विषय में विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. किन्हीं तीन अलंकारों को आरोह-अवरोह क्रम से लिखिए।
3. निम्नलिखित स्वरों को आरोही क्रम से लिखिए-

   सांनिसांध, निधनिय, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. अलंकार
2. आभूषण
3. पल्टा

3.2

1. सांनिधप मगरेसा
2. सांनि, निध, धप, पम, मग, ग रे रे सा
3. धनिसा, प ध

4

ताल परिचय

हिन्दुस्तानी संगीत कोर्स के सिद्धांत भाग के अंतर्गत ताल की अवधारणा के विषय में पहले ही बताया जा चुका है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त शब्द का उपयोग संगीत की महानता को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जोकि कोई भी तालबद्ध ताल है। ताल के विभिन्न ठेकों का विवरण प्रयोगात्मक भाग में दी गयी बंदिशों को बेहतर रूप से समझने के लिए प्रस्तुत पाठ में दिया जा रहा है। ठेकों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- उल्लेखित तालों का विस्तार में वर्णन कर सकेंगे;
- उल्लेखित तालों को लिख सकेंगे;
- विभिन्न तालों को पहचान सकेंगे;
- तालों का लय के साथ उच्चारण कर सकेंगे।

तीनताल

मात्राएँ – 16

विभाग – 4 (प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा पर)

ख़ाली – 'O' (नौंवी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पाँचवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (तेरहवीं मात्रा पर)

तीनताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
X				2				0				3			

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थान भरिए:-

1. ताल को कभी-कभी ताल या ..... कहते हैं।
2. ताल शब्द का उपयोग भारतीय ..... संगीत में किया जाता है।

टिप्पणी

3. विभिन्न तालों की ..... का वर्णन करें।
4. तीन ताल में ..... भाग होते हैं।

दादरा

मात्राएँ – 6

विभाग – 2 (प्रत्येक विभाग में तीन-तीन मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (चौथी मात्रा पर)

दादरा का ठेका

1	2	3		4	5	6
धा	धी	ना		धा	ती	ना
X				O		

कहरवा

मात्राएँ – 8

विभाग – 2 (प्रत्येक विभाग में चार-चार मात्राएँ)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (पांचवीं मात्रा पर)

कहरवा ताल का ठेका

1	2	3	4		5	6	7	8
धा	गे	ना	ती		ना	के	धी	न
X					O			

पाठगत प्रश्न 4.2

1. दादरा ताल की मात्राओं की संख्या लिखिए।
2. दादरा ताल का ठेका लिखिए।
3. कहरवा ताल में कितने भाग होते हैं।
4. कहरवा ताल की मात्राएं सम तथा खाली के साथ लिखिए।

टिप्पणी

झपताल

मात्राएँ – 10

विभाग – 4 (इनमें दो विभागों में दो-दो मात्राएँ तथा दो विभागों में तीन-तीन मात्राएँ होती है)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (छठीं मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (तीसरी मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (आठवीं मात्रा पर)

झपताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
X		2			O		3		

एकताल

मात्राएँ – 12

विभाग – 6 (प्रत्येक विभाग में दो-दो मात्राएँ हैं)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (तीसरी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पांचवी मात्रा पर)

दूसरी खाली – 'O' (सातवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (नौंवी मात्रा पर)

चौथी ताली – '4' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

एकताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
X		0		2		0		3		4	

टिप्पणी

चौताल

मात्राएँ – 12

विभाग – 6 (प्रत्येक विभाग में दो-दो मात्राएँ हैं)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

ख़ाली – 'O' (तीसरी मात्रा पर)

दूसरी ताली – '2' (पांचवी मात्रा पर)

दूसरी खाली – 'O' (सातवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (नौंवी मात्रा पर)

चौथी ताली – '4' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

चौताल का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
X		0		2		0		3		4	

धमार

मात्राएँ – 14

विभाग – 4 (पहले विभाग में 5 मात्राएं, दूसरे विभाग में 2 मात्राएं, तीसरे विभाग में 3 मात्राएं तथा चौथे विभाग में 4 मात्राएं होती हैं।)

सम – 'X' (पहली मात्रा)

दूसरी ताली – '2' (छठी मात्रा पर)

ख़ाली – 'O' (आठवीं मात्रा पर)

तीसरी ताली – '3' (ग्यारहवीं मात्रा पर)

धमार का ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
X					2		0			3			

पाठगत प्रश्न 4.3

1. सम और खाली को आप किस प्रकार लिखेंगे।
2. झपताल में कितनी मात्राएं होती है।
3. एक ताल के भाग लिखिए।
4. चौताल में सम और खाली को लिखिए।
5. ताल धमार का ठेका लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. ताल 'शब्द का प्रयोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में होता है।
2. शाब्दिक अर्थ है एक ताली, किसी की बांह पर किसी का हाथ बांधना।
3. विभिन्न तालों का ठेका जैसे तीन ताल, दादरा, झपताल, एकताल, चौताल, धमार का वर्णन है।
4. ताल का विस्तृत वर्णन ताली, खाली, सम तथा विभाग सहित है।

पाठांत प्रश्न

1. संगीत में ताल के विषय में लिखिए।
2. तीन-ताल तथा दादरा ताल का ठेका सहित वर्णन कीजिए।
3. एक ताल तथा चौताल में अंतर लिखिए।
4. धमार ताल के विषय में लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. ताल
2. शास्त्रीय
3. ठेका
4. चार

टिप्पणी

4.2

1. छः मात्रा
2.

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	ती	ना

3. दो
4. सम – पहली मात्रा पर, खाली–चौथी की मात्रा पर

4.3

1. सम "X", खाली "O"
2. 10 मात्रा
3. 6
4. सम – पहली मात्रा पर

   खाली – तीसरी तथा सातवीं मात्रा पर
5. ताल धमार का ठेका

का	धि	ता	धि	ता	धा	ऽ	गा	ति	ता	ति	ता	ता	ऽ
X					2		0		3				

5

देशभक्ति गीत

(क)

हिन्द देश के निवासी

भारतवर्ष विविधताओं का देश है। इस देश की धरती पर विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं जिसके कारण यहाँ के पेड़-पौधे, लोग, लोगों का रहन-सहन तथा पशु-पक्षी तक प्रभावित होते हैं। इन प्रभावों के मद्देनज़र हमें अत्यधिक विविधताएं दिखाई पड़ती हैं जो कि इस पृथ्वी पर बहुत ही कम देशों में विद्यमान हैं। प्रस्तुत गीत में इन्हीं विविधताओं का वर्णन किया गया है। इस वर्णन के माध्यम से गीतकार ने अपने देशभक्ति, देशप्रेम तथा भारतवर्ष की भव्यता को दर्शाने का एक सफल प्रयास किया है। भारतवासियों के रंग रूप, वेष, भाषा आदि की विभिन्नताओं का वर्णन है। बेला, गुलाब, जूही आदि पुष्पों तथा कोयल, पपीहें, बुलबुल आदि के द्वारा अनेकता में एकता का प्रदर्शन किया है। इसके अतिरिक्त इस धरती पर बहने वाली अनेक पवित्र नदियों के उदाहरण द्वारा हमारे देश की प्राकृतिक सम्पन्नता पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- उल्लेखित देश भक्ति गीत की पृष्ठभूमि बता पायेंगे;
- उल्लेखित देश भक्ति गीत को सही रूप में प्रस्तुत कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- दिये गीत के बोलों को लिख पायेंगे।

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।

(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।।

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।।

(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।।

टिप्पणी

स्वरलिपि

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

स्थायी

सा	–रे	स	–रे	सा	–रे	सानि	प़
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी
X				O			
–	प़नि़	–सा	–नि	सरे	–रे	रे	–
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ–
X				O			
म	–म	म	मग	रेग	–ग	रेसा	सानि
रं	ऽग	रू	ऽप	वेऽ	ऽश	माऽ	षाऽ
X				O			
–	नि़सा	नि़सा	रेरे	सा	–सा	सा	–
ऽ	चाऽ	ऽहे	ऽअ	ने	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अंतरा

–	ग–	रेग	–म	प	–प	प	प
ऽ	बेऽ	ऽला	ऽगु	ला	ऽब	जू	ही
X				O			
–	प	–प	–ध	ग	प	म	ग
ऽ	चं	ऽपा	ऽच	मे	ऽ	ली	ऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	नी	–नी	सरे	रेग
ऽ	प्या	रेप्या	ऽरे	फू	ऽल	गूँऽ	थेऽ
X				O			
–	म	गरे	सासा	सा	–सा	सा	–
ऽ	मा	ऽला	ऽमें	ए	ऽक	हैं	ऽ
X				O			

अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. देशभक्ति गीत में विविधता को सुंदरता से ..... किया गया है।
2. कवि ने भारत के लोगों को ..... बताते हुए अलग-अलग ..... का वर्णित किया है।
3. कवि ने भारत के लोगों की तुलना अलग-अलग ..... की है, परन्तु अन्त में .... में मिल गई है।

टिप्पणी

(ख)

जय जन भारत

इस गीत में कवि ने हमारे देश की प्रमुख विशेषतायें वर्णित की हैं तथा भारत के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित की है। हमारे देश की शान हिमालय पर्वत तथा पवित्र नदी गंगा की महिमा का भरपूर गुणगान किया है। कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा के रूप में वर्णित किया है। जिस भूमि के माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित है, हृदय में पावन गंगा हार के समान प्रवाहित हो रही है, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर शोभायमान है, ऐसी धरती की हम वन्दना करते हैं। प्रकृति की निरन्तर गतिशीलता को भारतवर्ष की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और निरन्तर काम करते हुए लोगों की महिमा गाकर हम गौरव का अनुभव करते हैं। संसार की सर्वाधिक पुरानी सभ्यता के रूप में भारत अग्रणी है। मानव को सत्य, अहिंसा, शान्ति का संदेश देने वाला यह देश वन्दनीय एवं पूजनीय है। प्रस्तुत बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दी गयी सी.डी. को सुनें।

जय जन भारत

जय जन भारत जन मन अभिमत
जन गण तंत्र विधाता

1. गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल
   कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2. हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर
   विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3. प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाता
   जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता
   जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

स्वरलिपि

ताल-कहरवा (8 मात्रा)

नोट- इसमें पाँचवां काला स्केल का प्रयोग है।

स्थायी

X				O			
ग	ग	म	प	प	-	प	प
ज	य	ज	न	भा	ऽ	र	त

टिप्पणी

प	प	ध्	प	म	प	म	ग
ज	न	म	न	अ	भि	म	त
–	गग	–म	प	प	–	सां	प
ऽ	जन	–ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा-I

X				O			
प	–	प	प	सां	–	सां	सां
गौ	ऽ	र	व	भा	ऽ	ल	हि
सां	–	रें	गं	सां	–	रें	रें
मा	ऽ	ल	य	उ	ऽ	ज्जव	ल
रें	रें	रें	रें	–	गं	सारें	सांनि
ह	द	य	हा	ऽ	र	गंऽ	ऽऽ
नी	–	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
गा	ऽ	ज	ल	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
–	म	प	प	प	–	प	प
ऽ	क	टि	विं	ध्या	ऽ	च	ल
रें	–	सां	नी	सां	ध	ध	ध
सिं	ऽ	धु	च	र	ण	त	ल

टिप्पणी

–	म	म	म	ध	ध	ध	ध
ऽ	म	हि	मा	शा	ऽ	श्व	त
सां	–	सां	–	प	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

दूसरी बार

प	–	प	म	ग	रे	सा	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा II की स्वरलिपि अंतरा I के समान है।

अंतरा-III

X O

प	प	प	प	–	प	प	ध
प्र	थ	म	स	ऽ	भ्य	ता	ऽ
ध	नी	नी	–	–	–	–	–
ज्ञा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
सा	ऽ	म	ध्व	नि	त	गु	ण
(रें)	–	सां	–	–	–नी	धनी	धप
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

दूसरी बार

X O

रें	–	सां	–	–	–	–	–
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	गं	गं	गं	गं	–	गं	गं
ज	य	न	व	मा	ऽ	न	व
गं	–	गं	सां	रें	–	रें	–
ता	ऽ	नि	र	मा	ऽ	ता	ऽ

टिप्पणी

रें	–	रें	रें		रें	–	सां	नी
स	ऽ	त्य	अ		हिं	ऽ	सा	ऽ
रें	–	सां	–		–	–	–	–
दा	ऽ	ता	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
							प	प
							ज	य
सां	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
रें	–	–	–		–	–	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ज	य
गं	–	–	–		–	–	–	–
हे	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	–	रें	सां		रें	–	सां	नी
शां	ऽ	ति	अ		धि	ऽ	ष्ठा	ऽ
सां	नी	ध	प		म	ग	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	म	प		प	–	प	प
ज	य	ज	न		भा	ऽ	र	त
प	प	ध	प		म	प	म	ग
ज	न	म	न		अ	भि	म	त
–	गग	म	प		प	–	सां	प
ऽ	जन	ग	ण		तं	ऽ	त्र	वि

टिप्पणी

ध	–	ध	–	म	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	–	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	–	प	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	–	प	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	–	ध	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	ध	ध	ध	ध	–	ध	ध
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
नी	–	नी	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नी	नी	नी	नी	नी	–	नी	नीरें
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
(रें)	सां	सां	–	–	–	–	–
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 5.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. कवि ने हिमालय को हमारे देश का ..... बताया है, तथा ..... नदी के सौंदर्य का वर्ण किया है।
2. कवि ने भारत को सजीव ..... के रूप में वर्णित किया है।
3. संसार में भारत की सर्वाधिक ..... है।

टिप्पणी

(ग)

तेरे चरणों में झुका माथ है

प्रस्तुत गीत देश के प्रति आभार प्रकट करने के विषय में है। इस गीत के माध्यम से कवि गंगा, गोदावरी इत्यादि नदियों की प्रकृति एवं सौंदर्य के विशाल स्वरूप का वर्णन करता है। इसमें देश की गरिमा के लिये यहाँ के लोगों का जीवन न्यौछावर करने की तत्परता बतायी गयी है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में इस गीत का क्रियात्मक प्रदर्शन सुनें।

स्थायी

तेरे चरणों में (3)
झुका माथ है (3)
तेरे चरणों में
आकाश जिसकी ध्वजाएं उड़ाता,
जो है, युगों से धरा पर सुहाता,
तू है वही मान मन्दिर हमारा,
कण कण जिसे जोड़ता हाथ है,
झुका माथ है
तेरे चरणों में...

गोदावरी गंगा

गोदावरी और गंगा किनारे,
सौगंध है एक ही धूल की,
कश्मीर बंगाल गुजरात केरल
गाता वही धूल की शूल की
जागी हुई देश की आरती में,
जागी हुई भारती साथ है
झुका माथ है...
तेरे चरणों में...

स्वरलिपि

ताल - दादरा (6 मात्रा)

नोट: इस गीत के लिये सी शार्प/पहले काले स्केल का इस्तेमाल करें।

x			0		
			–	सा	रे
			ऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ

टिप्पणी

रे	रे	रेग	रेग	सा	रे
चर	णों	मेंऽ	मेंऽ	ते	रे
ग	ग	ग	–	मग	रेसा
चर	णों	में	ऽ	तेऽ	रेऽ
रे	रे	गरे	सानि़	ध़नि़	प़ऽ
चर	णों	ऽऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	-नि़	नि़	नि़	नि़ सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	-स	सा	नि़	प़
का	मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा I

x			0		
प	सां	सां	सां	सां	सां
आ	का	श	जिस	की	ऽ
म	ध	ध	ध	ध	ध
ध्व	जा	यें	उ	ड़ा	ता

टिप्पणी

म	ध	ऽध	ध	ध	ऽध
जो	है	ऽयु	गों	से	ऽध
नि	ध	ऽप	प	प	प
रा	प	ऽर	सु	हा	ता
प	ग	–ग	म	म	म
तु	है	ऽव	ही	मा	न
प	ध	ऽनि	ध	प	य
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
प	ग	रे	सा	प	–प
तु	है	व	ही	मा	ऽन
प	ध	ऽनि	ध	प	प
म	न्दि	रऽ	ह	मा	रा
स	ग	ऽग	ग	मग	रेसा
कण	कण	ऽजि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	स	–ग	ग	मग	रेसा
कण	कण	–जि	से	जोऽ	ऽड़
रे	रे	गरे	नि़	ध़नि	प़ऽ
ता	हा	ऽथ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु

टिप्पणी

ध़	ध़	ध़	ध़	ऽ	ऽध
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	निसा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	–रे	सा	सा	ध़	प़
का	–मा	थ	है	ते	रे
सा	सा	सा	–	–	–
च	र	णों	में	–	–

अंतरा II

x			0		
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽऽ	व	री	ऽ
सा	म	–	–	–	–
गं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	धप	धप	प	प	प
गो	दाऽ	ऽव	री	औ	र
ग	–रे	–स	रे	ग	ऽ
गं	ऽगा	–कि	ना	रे	ऽ
रेग	रेसा	रेसा	ध़स	ध़प	ध़प़
सौऽ	ऽग	न्ध	हैऽ	ऽए	ऽक
ग	–रे	–सा	सा	–	–
ही	ऽ	–धू	ऽ	ल	की
प	सां	सां	सां	सां	सां
क	श्मी	र	बं	गा	ल

टिप्पणी

म	ध	ध	ध	ध	ध
गुज	रा	त	के	र	ल
म	ध	ध	ध	ध	ध
गा	ता	व	ही	धू	ल
नि	धऽ	प	प	ऽ	ऽ
की	शू	ल	की	ऽ	ऽ
प	प	ग	म	म	–म
जा	गी	हु	ई	दे	–श
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
प	ग	रे	सा	प	–प
जा	गी	हु	ई	दे	ऽश
प	ध	–नि	ध	प	ऽ
की	आ	–र	ती	में	ऽ
सा	ग	–गु	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भाऽ	ऽर
रे	रे	रे	रेग	रेग	रेग
ती	सा	ध	हैऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	ग	–ग	ग	मग	रेस
जा	गी	–हु	ई	भा	ऽर
रे	रे	गरे	सानि	धनि	पऽ
ती	सा	थऽ	हैऽ	ऽऽ	ऽझु
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	ऽध़
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु

नि़	नि़	नि़	नि़	नि़	नि़सा
का	मा	थ	है	ऽ	ऽझु
ग	रे	सा	–	ध़	प़
का	मा	थ	है	तें	रे
सा	सा	सा	–	–	–
चर	णों	में	–		

पाठगत प्रश्न 5.3

सही प्रश्न चुनिए–

1. गीत में आभार प्रगट किया गया है।

   (i) देश के प्रति

   (ii) मानवता के लिए

   (iii) आकाश के लिए

2. कवि ने नदियों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

   (i) गंगा, गोदावरी

   (ii) कृष्णा, कावेरी

   (iii) नर्मदा, ताप्ति

3. भारत के लोग हमेशा अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तत्पर होते हैं क्योंकि–

   (i) वन्य जीवन के रक्षण के लिए

   (ii) राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

   (iii) हरे पौधों के रक्षण के लिए।

टिप्पणी

(घ)

चंदा जैसी धरा हमारी

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी''

अर्थात यह धरती, जिस पर हमने जन्म लिया है वह हमारे लिए स्वर्ग से बढ़कर है।

ठीक इसी प्रकार के भावों को इस देशभक्ति गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश के बहुत से पर्व व त्यौहार यहां पर होने वाली उपज के मौसम पर ही आधारित हैं। हमारे लिए फसल के दाने किसी हीरे, जवाहरात आदि रत्नों से कम नहीं हैं। हमारे देश में अध्यात्म को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है जिसके कारण पूरा विश्व हमारे देश को गुरूपद मानता है। हमारा देश इस प्रकार का सदाबहार बाग है जिसमें सदैव प्रेम के गीत गाए जाते हैं। एक ओर इस देश का किसान मेहनत करके देश के लोगों को अन्न उपलब्ध कराता है तथा दूसरी ओर हमारे देश की फौज का जवान हमारे लोगों की बाहरी आक्रमण से रक्षा करने में पूर्ण रूप से जागरूक है। इसलिए हम इन दोनों को नमन करते हैं। हमारे देश का कामगार और तकनीकी कारीगर पूरे विश्व में सर्वोच्च है। साथ में उपलब्ध सी.डी. में प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन को सुनें।

चंदा जैसी धरा

स्थायी

चंदा जैसी धरा हमारी, फूल समान हमारा वतन
भारत के खेतों में उपजें, हीरे, मोती, लाल रतन

अंतरा-1

मिट्टी में सोना उपजाते इसके मेहनत कश इंसान
सीमाओं की रक्षा करते जागरूक है वीर जवान
या किसान हो या जवान हो दोनों को शतबार नमन
भारत के .....

अंतरा-2

रक्षक है ईमान हमारा धर्म हमारा पहरेदार
इसलिये सारी दुनिया में देश हमारा है सरताज
प्रीत के गीत है कोयल गाती यह है सदाबहार चमन
भारत के .....

टिप्पणी

अंतरा-3

इसकी मिट्टी की खुशबू में कुदरत ने हैं मस्ती भरी
दुनिया भी है दंग देखकर, कामगारों की जादूगरी
लाख कोशिशें कर ले दुश्मन, छीन सकेगा न इसका अमन
भारत के .....

स्वरलिपि

राग-पाहारी, ताल-केहरवा (8 मात्रा)

यह गीत पहाड़ी राग पर आधारित है और ताल कहरवा में निबद्ध है। स्वर तीसरा काला (F#) है।

आलाप

X				O			
ध	–	–	–	स	नि़	रे	सा
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	ध़	–	–	–	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	–	–	ध़	–	रे	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	हो	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

स्थाई

प़	–	प़	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
ध	रा	ऽ	ह	मा	ऽ	री	ऽ
रे	रे	–	रे	सा	–	ध़	ध़
फू	ऽ	ल	स	मा	ऽ	न	ह

टिप्पणी

रे	स	ग	रे	सा	–	–	–
मा	ऽ	रा	व	तन	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	–	ध़	ध़	ध़	–	ध़	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तों	ऽ	में	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ
ग	–	ग	रे	ग	रे	–	ध़
ला	ऽ	ल	र	तन	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	ग	–	ग	–
चं	ऽ	दा	ऽ	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	स
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा 1

X				O			
प	–	प	–	प	–	प	–
मि	ऽ	ट्टी	ऽ	मे	ऽ	सो	ऽ
ध	प	ध	प	ग	रे	ग	–
ना	ऽ	उ	प	जा	ऽ	ते	ऽ
–	–	–	प	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

टिप्पणी

सा	–	सा	सा	रे	–	ग	–
इ	स	के	ऽ	मेह	ऽ	नत	ऽ
ध	ध	ध	–	प	–	–	प
क	श	इं	ऽ	सा	ऽ	ऽ	न
ध	ध	ध	–	ध	–	ध	म
सी	ऽ	मा	ऽ	ओ	ऽ	की	ऽ
ग	–	म	रे	रे	–	रे	रे
र	ऽ	क्षा	ऽ	कर	ऽ	ते	ऽ
रे	–	रे	रे	ग	–	ग	–
जा	–	ग	रु	ऽ	क	है	ऽ
ध	–	ध	प	प	–	–	प
वी	ऽ	र	ज	वा	ऽ	ऽ	न
प	–	प	–	ग	–	ग	–
या	–	कि	सा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	रे	–	रे	ग	–	ग	–
य	–	ज	वा	ऽ	न	हो	ऽ
रे	–	रे	रे	रे	सा	–	–
दो	–	तो	ऽ	को	ऽ	श	त
ग	रे	ग	रे	सा	–	–	–
बा	ऽ	र	न	म	न	ऽ	ऽ
ध	–	ध	ध	ध	–	ध	सा
भा	ऽ	र	त	के	ऽ	खे	ऽ
ध़	प़	प़	प़	प़	प़	प़	प़
तो	ऽ	मे	ऽ	उ	प	जे	ऽ
प	–	प	–	म	–	म	–
ही	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	ती	ऽ

टिप्पणी

ग	–	ग	रे	|	ग	रे	–	सा
ला	–	ल	र	|	तत	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	प़	–	|	ग	–	झ	–
चं	ऽ	दा	ऽ	|	जै	ऽ	सी	ऽ
–	–	–	प	|	म	ग	रे	सा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	–	|	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे अंतरे की स्वरलिपि है।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. ''जननी चन्मभूमिश्च इच स्वर्गादपि गरियसी'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।
2. भारत के किस ऋतु पर कई मेले एवं पर्व आधारित हैं?
3. वह कौन-सी वस्तुएं है, जिनकी तुलना फसल के होने के साथ की जाती है।

टिप्पणी

(ङ)

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

'सारे जहां से अच्छा' एम. इकबाल द्वारा लिखा गया एक प्रचलित देशभक्ति गीत है। इसे 'तराना-ए-हिन्द' नाम से भी जाना जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व लगभग 1904 में लिखे गये भारतीय उप-महाद्वीप के इस स्तुतिगान का सामान्य अर्थ है कि हमारा देश हिन्दोस्तान समस्त संसार से अच्छा है। हम इसकी बुलबुले हैं और यह हमारा गुलिस्तान है। यह सबसे ऊंचा पर्वत है जो हमारी रखवाली करता है। इसकी गोद में हज़ारों नदियां किलकारी करती हैं, जिससे स्वर्ग को भी ईष्या हो जाये। धर्म आपस में द्वेष करना नहीं सिखाता। मूल गीत में अन्य पद भी हैं, परन्तु नीचे दिया गया संक्षिप्त संस्करण भारत में विविध धुनों में प्रचलित हैं।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

शब्दकार–एम. इकबाल

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुल बुलें हैं उसकी, वो गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।

टिप्पणी

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा''

ताल–कहरवा (द्रुत लय) या धुमाली

0
– सा
सा

स्थायी

x		0		x		0		x		0		x		0	
रेम	– –	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां –
रे ऽ	ऽ ऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	हम
नां निः	–ध	नि–	–ध	निरें	सा–	––	ध–	पप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	सां–
बुल	ऽ बु	लेऽ	ऽहैं	उस	कीऽ	ऽऽ	वोऽ	गुल्	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ,	सा
रेम	– –	पध	– म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –	– –
रेऽ	ऽ ऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽसि	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

अन्तरा

x		0		x		0		x		0		x		0
सां–	–सां	धम	–ध	सां–	सां–	––	धसां	रं–	––	सारें	गरे	सांनि	ध–	ध –
वऽ	ऽत	वोस	बसे	ऊँऽ	चाऽ	ऽऽ	हम	साऽ	ऽऽ	याआ	ऽस	मांऽ	काऽ	ऽ ऽ
रे –	–सां	निसां	–नी	धनि	धप	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म' –	– –
संऽ	ऽत	रीऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	बाँऽ	पाऽ	ऽस	बाऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ
रेम	–म	पध	–म	पध	ध–	––	प–	मप	–म	प–	–सां	धप	म–	– –
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽ ऽ	हिऽ	न्दोऽ	ऽस	ताँऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽ ऽ

शेष दो अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ..... जोकि सबसे ऊंचा पर्वत है, हमारी रक्षा करता है।
2. स्तुति गान का सामान्य अर्थ है, कि हिन्दुस्तान समस्त ..... से अच्छा है।
3. हिमालय पर्वत की गोद में हजारों उल्लासपूर्ण नदियाँ हैं, जिससे ..... होती है।

आपने क्या सीखा

1. देश भक्ति के गीतों में कवियों ने भारत के लोगों को अलग प्रकार से वर्णित किया है।
2. कवि ने अनेकता में एकता को बताते हुए अपने देश के प्रति अपने भक्तिभाव को दर्शाने का प्रयत्न किया है।
3. राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता तथा गंगा, गोदावरी आदि नदियों की सुंदरता दर्शाया गया है।
4. ऐसा उल्लेख किया गया है कि भारत के लोग, देश की प्रभुसत्ता को बचाने के लिए सदैव अपने जीवन का बलिदान करने को तैयार रहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. ''हिंद देश के निवासी'' इस कविता की पृष्ठ भूमि को समझाइए।
2. ''एकता में अनेकता'' वर्णन कीजिए।
3. ''कवि ने भारत को एक सजीव प्रतिमा'' के रूप में वर्णित किया है। कैसे?
4. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। समझाइए।
5. ''सारे जहाँ से अच्छा'' इस गीत के अर्थ की पृष्ठभूमि को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. वर्णित
2. माला, फूल
3. नदियों, सागर

5.2

1. गौरव, गंगा
2. प्रतिमा
3. प्राचीन सभ्यता

टिप्पणी

5.3

1. देश के प्रति
2. गंगा, गोदावरी
3. राष्ट्र की गरिमा को बचाने के लिए

5.4

1. जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।
2. उपज के मौसम
3. कीमती रत्न, जैसे- हीरे, जवाहरात

5.5

1. हिमालय
2. संसार
3. स्वर्ग को भी ईर्ष्या

6

लोकगीत

(क)

गढ़वाली लोकगीत

यह गीत उत्तराखंड का लोक गीत है, जो कि उत्तराखंड में होने वाले मेलों अथवा पर्वों में गाया जाता है। जिस प्रकार कई बार गीत में तुकबंदी के लिये निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार इस गीत में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग मिलता है।

इस गीत में युवक-युवती के बीच गीत के माध्यम से संवाद हो रहा है, जिसमें युवक कहता है कि मेरे गांव में मेला लगा है और आप भी उस मेले को देखने आइये। तब युवती कहती है कि यह समय जेठ की बारा गति का है और इस समय आपके गांव के खेतों में गेहूं की फसल लगी है, जो दिखने में सुन्दर लगती है। इसलिये मैं भी मेले को देखने आ रही हूँ। प्रस्तुत गीतों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सीडी को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी :

- लोकगीत की पृष्ठभूमि एवं शैली का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत को प्रदर्शित कर पायेंगे;
- प्रस्तुत लोकगीत के बोलों का वर्णन कर पायेंगे;
- प्रदेश के लोकगीत को पहचान पायेंगे।

1) लै पाकी जाला केलमा लै पाकी जाला केला
लै तू भी आई जाणू रे मेरा गौं का मेला
हो निलिमा मेरा गौं का मेला।

2) लै तीलू मां का तेलमा लै तीलू मां का तेला
ओ बीरूमां बीरूमां लै तीलू मां का तेला
लै कति गति ओंदी रे तैरा गौं का मेला
ओ बीरूमां बीरूमां तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

3) लै गेहूं जौ का लेटा मा, लै गेहूं जौ का लेटा
ओ निलिमा निलीमा लै गेहूं जौ का लेटा
लै तेरा गौं का मेला रे बारा गति जेठा
ओ निलिमा निलिमा बारा गति जेठा।

4) लै कुकड़ी को बीटा मा लै कुकडी को बीटा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कुकड़ी को बीटा
लै तेरा गौं का मेला रे छकी ल्यूला गीता
ओ बीरूमा बीरूमा छकी ल्यूला गीता।

5) लै पीतैले पराता मां लै पीतैले परात
ओ निलीमा निलीमा लै पीतैले पराता
यनि लौंणा गित रे यखी खुल्या रात
ओ निलीमा निलीमा यखी खुल्या रात।

6) लै दही की जामुणां मां लै दही की जमुणा
ओ बीरूमा बीरूमा लै दही की जमुणा
लै तेरा गौं का मेला रे क्या देली सामुणा
ओ बीरूमा बीरूमा क्या देली सामुणा।

7) लै गीत लाई झुमैला मा लै गीत आई सुमेला
ओ निलीमा निलीमा लै गीत आई सुमेला
सामोणा मां द्यूलू रे अपुणु रूमैला
ओ निलीमा निलीमा अपुणु रूमैला।

8) लै कन्डाली को हेरा मा लै कन्डाली को हेरा
ओ बीरूमा बीरूमा लै कन्डाली को हेरा
यखुली यखुली रे मैं लगदी का डेरा
ओ बीरूमा बीरूमा मैं लगदी का डेरा।
ओ निलिमा निलीमा मेरा गौं का मेला
ओ बीरूमा बीरूमा तेरा गौं का मेला।

टिप्पणी

स्वरलिपि

खेमटा ताल

X			0			X			3		
											साग (लैऽ)
ग	प	म	म	ऽ	प	प	प	म	ग	सा	ग
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ल	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	–
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नि	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	लै	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग		
पा	की	ऽ	जा	ऽ	ला	कै	ऽ	ला	ऽ		
										सा	ग
										लै	ऽ
ग	प	म	म	–	प	प	प	म	ग	सा	ग
तू	भी	ऽ	आ	ऽ	ई	जा	णू	रे	ऽ	मे	ऽ
ग	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	नि	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ
नी	सां	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	ग	सा	ग
नी	ली	ऽ	मा	ऽ	ऽ	नी	ली	मा	ऽ	मे	ऽ
ग	म	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ऽ	ऽ
रा	गौं	ऽ	का	ऽ	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	–	–

(अन्य अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगे)

पाठगत प्रश्न 6.1

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. उत्तरांचल का गढ़वाली लोक गीत ''लै पाकी जाला केलमा'' ..... तथा ..... के समय गाया जाता है।
2. गीत में ..... और ..... के बीच संवाद है।
3. गीत में ..... के लिए अर्थहीन शब्दों का प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ख)

हरियाणवी लोक गीत

इस प्रकार के लोकगीत सामाजिक शिक्षाप्रद गीतों की श्रेणी में आते हैं जिनमें दी गई शिक्षा को अगर हम असल जीवन में उतारें तो वह हमारे लिये बहुत फायदेमंद तो साबित होती ही है, हम उन बहुत सारी परेशानियों से भी बच जाते हैं जो हमारे जीवन में आती हैं। इन गीतों का गायन हर मौसम व हर उत्सव पर किया जाता है। बच्चे, जवान व बूढ़े इन गीतों को बड़े चाव से सुनते हैं। इस गीत का भाव इस प्रकार है कि ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बार-बार भी दी जाए तो भी वह उसे ठीक से नहीं अपनाता, पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवा देता है तथा उस शिक्षा से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित रह जाता है।

हरियाणवी लोक गीत

ज्ञान की बाते सुणे ज्ञानी तो समझे एक इशारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

कैरा माणस काला ढोरी घर पाछे ने मोरी हो।
उस लाठी का नहीं भरोसा जिसकी लाम्बी पोरी हो।
सास बहू ते झगड़म झगड़ा नहीं काम की गोरी हो।
घर क्यां ने समझानी चाहिये जो बड़बोला छोरी हो।।
भाई-भाई रहें झगड़ते सबकी गाली खाते हैं।
नुगरा मानस जागे कोन्या सौ सौ रूकै मारे तै।

भगवां बाणा धारण करके न्यूं के साधु होए आ केरे।
कोई कोई साधु वो बणज्या जो घर ते बाधु हुआ करैं।
बिना भजन का साधू तै एक टट्टू लादू हुआ करै।
असली साधु धोरे हरिभजन का जादू हुआ करै।
भक्ति भाव बिना कनफाड़े मांगें टूक द्वारे तै।
नुगरा मानस माणे कोन्या सौ-सौ रूकै मारे तै।।

टिप्पणी

हरियाण्वी लोक गीत

स्वरलिपि

ताल - कहरवा - (8 मात्रा)

स्थायी

X				0			
				पप	पप	ध ध	पमग
				ज्ञान	की बात	सुनै	ज्ञानी तो
गमप	मग	रेग	रेस	ग ग	रे स	नि ध	सासा
समझै	एक	इशारे	तैऽ	नुगरा	मानस	मानै	कोन्या
सरे	गम	गसरे	गस				
सौसौ	रुके	मारेऽ	तैऽ				

अन्तरा 1

				पप	पप	पप	पप
				कैरा	माणस	काला	ढ़ोरी
पध	धनि	धप	न	मम	मम	मम	मम
घर	पाछे	नमोरी	हो	उस	लाठी	कानहीं	भरोसा
गम	मप	मम	म				
जिसकी	लाम्बी	पोरी	हो				

अन्तरा 2

				ग ग	ग ग	रेग	ग ग
				सास	बहु	तैझग	ड्मझगड़ा
सरे	रेग	रेस	स	गम	गग	रेग	गग
नही	कामकी	गोरी	हो	घरक्यां	नेसम	झाणी	चाहिये
सरे	रेग	रेस	स				
जोबड़	बोला	छोहरी	हो				

टिप्पणी

अन्तरा 3

				पप	पप	धध	पमग
				भाई	भाई	रहैझग	ड़ते
गमप	मग	रेग	रेस	गग	रेस	–	–
सबकी	गाली	खाते	हैंऽ	नुगरा	माणस	–	–

अन्तरा 4

X 0

				पप	पप	पप	पप
				भगवा	बाणा	धारण	करके
पध	धनि	धप	मा				
न्यूके	साधु	हुया	करै				
				मम	मम	मम	मम
				कोई–2	साधु	वो बण	ज्याजो
गम	मप	मम	मा				
धरपै	बाधु	होएआ	करै				

अन्तरा 5

0

				ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
				बि ना	भजन	का साधु	नै एक
X							
सारे	रे गा	रे सा	स	ग ग	ग रे	ग ग	ग ग
टट्टू	लाटू	हुआ	करै	असली	साधु	धोरे	हरि
सारे	रेगा	रेसा	स				
भजन	का जादू	हुआ	करै				

अन्तरा 6

0

				पप	पप	धध	पम
				भक्ति	भाव	बिना	कनफाड़े
X							
गम	मग	रेसा	रेसा	ग ग	रेस		
मांगेंऽ	टूक	द्वारे	तैऽ	नुंगरा	माणस		

पाठगत प्रश्न 6.2

1. ''ज्ञान की बात सुणे ज्ञानी'' इस गीत का सारांश लिखिए।
2. ''ज्ञान की बात सुने ज्ञानी'' यह गीत किस मौसम में गाया जाता है।
3. इस प्रकार के लोक गीत किस वर्ग में आते हैं? लिखिए।

टिप्पणी

(ग)

पंजाबी लोकगीत (जिंदुआ)

यह पंजाबी लोक गीत 'पंजाब' में 'जिंदुआ' के नाम से प्रसिद्ध है। इस गीत में जीवन के साधारण पक्षों पर बात करते हुए सहजता का आनन्द लिया गया है। विभिन्न शहरों जैसे- पटियाला, करनाल और मुल्तान (पाकिस्तान) आदि की विशेषताओं का वर्णन भी इस गीत में मिलता है। उदाहरण के रूप में पटियाला के प्रसिद्ध रेशमी नाड़े तथा मुल्तान के पहलवानों तथा उनकी खुराक के बारे में वर्णन किया गया है जिससे कि वे बहुत ताकतवर हैं। इसके अतिरिक्त आम के पेड़ की खूबसूरती की तुलना पंजाब की जट्टियों (औरतों) से की गई है। और इस गीत में पंजाब की मीठी बोली की अत्यधिक सराहना करते हुए महत्व दिया गया है।

1. जिंद माई बाज तेरे कुम्लाईयां
तेरियाँ लाडलियाँ परजाईयाँ
बे बागी फेर कदे न आईयाँ
वे इक पल बह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

2. जिंद माई जे चल्यों पटियाले
ओत्थो लियांवीं रेशमी नाले
वे अद्दे चिट्टे ते अद्दे काले
वे गल्ला करनी की दुनिया वाले
वे इक पल वह जाणा मेरे कोल
तेरे मिठड़े ने लगदे बोल

3. जिंद माई अम्बियाँ नू लग गया बूर
वे जप्पीया दे मुखड़ा ते वरदा नूर
जिनू वेखके चढ़े सरूर
वे ईक पल बह जाणा....

4. जिंद माई जे चल्यो मुल्तान,
ओथे वड़े-वड़े पहलवान
वे मारण मुक्की ते, मारण मुक्की ते कढढन जाण
वे खादे गिरियां ते बदाम
वे इक पल बह जाणा मेरे...

टिप्पणी

5. जिद माई जट्टिया खेत वल आईयाँ
नक कोका कन्नी बलियाँ पाईयाँ
अँखियाँ कजले दे नाल सजाईयाँ
इक पल बह जाणा मेरे मखना
तेरे बाजो वेहड़ा सखना

6. जिंद माही जे चली यूं परदेस
का देवी पूल्ली ना अपना देस
के अपनी बोली ते अपना वेस
इक पल बह जाणा मेरे चंदा
वी छोड़ा दो दिलां दा मंदा

स्वरलिपि

ताल - कहरवा (8 मात्रा)

प्रारम्भिक संगीत हारमोनियम पर

1	2	3	4	5	6	7	8
ग	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	रें	ध	–	सं	–
गं	–	–	–	रें	–	–	–
सं	–	–	–	–	–	–	–
X				0			

पूरा टूकड़ा दो बार

1	2	3	4	5	6	7	8
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
			वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	जिं	द	मा	ई
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
बा	ऽ	ज	ते	रे	ऽ	कु	म
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
ला	ई	आं	वे	ते	री	यां	ऽ

सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	–	सं	सं	सं	रें	गं
ऽ	ऽ	ऽ	वे	ते	री	यां	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ला	ऽ	ड	ली	यां	ऽ	प	र
ध	सं	सं	सं	सं	सं	रें	गं
जा	ई	यां	वे	बा	ऽ	न	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	–
फे	ऽ	र	क	दे	ऽ	न	ऽ
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
आ	ई	यां	वे	इ	क	प	ल
सं	रें	रें	गं	गं	–	रें	रें
ब	ह	जा	ऽ	णा	ऽ	मे	रे
ध	सं	सं	सं	सं	रें	रें	गं
को	ऽ	ल	वे	ते	ऽ	रे	ऽ
सं	रें	रें	गं	गं	गं	रें	–
मि	ठ	डे	ने	ल	ग	दे	ऽ
ध	सं	–	–	–	सं	गं	रें
बो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ओ	ऽ
सं	–	गं	रें	सं	–	गं	रे
ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ	ओ	ऽ
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				0			

शेष अन्तरे इसी प्रकार हारमोनियम के piece के साथ बारी-बारी इसी स्वरलिपि के आधार पर गाए जाऐंगे।

पाठगत प्रश्न 6.3

सही प्रश्न चुनिए।

1. दिए हुए पंजाबी लोकगीत का नाम

   (i) जिंदुआ (ii) सारीगान (iii) भांगड़ा

2. इस गीत में पंजाबी युवतियों की तुलना किस के साथ की गयी है।

   (i) फूल (ii) आम का पेड़ (iii) मछली

3. इस गीत में किसकी प्रशंसा करते हुए उसे महत्व दिखा गया है।

   (i) पंजाबी खाना (ii) पंजाबी वस्त्र (iii) पंजाबी भाषा

टिप्पणी

(घ)

बंगाली लोक गीत

सारीगान

सारी गान बंगाल में प्रचलित लोक गीतों में से एक है, जिसे पश्चिम बंगाल एवं बंगलादेश में भी गाया जाता है। यह तेज़ लय में गाया जाने वाला गीत है, जो अधिकतर नाविकों द्वारा नौका दौड़ के समय गाया जाता है। प्रस्तुत गीत दादरा ताल में बद्ध है। इसके साथ दो-तारा तथा तबला वाद्यों का प्रयोग होता है। इस गीत में जो नाविकों का प्रमुख माझी है, वह अन्य नाविकों को नौका जल्दी चलाने के लिये प्रेरित कर रहा है।

स्थायी

रुपसी नोदीर नाव

सुजान माझीर नाव

तरतराइया जाय हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

अंतरा

आरे हेइ समालों हेइयो

आरे तागोद दिया बाइयो

फूलमोतीर केरामोती उईड़ा देखाइयो, हायरे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

संचारी

बुड़ा मियांर बेटा रे भाई, काइला चाचार लाती

जान दिया बाइयो रे मोन फूइल्ला बुकेर छाती।।

आभोग

आरे बोइठा मारो हेइयो

आरे शक्तो हाते बाइयो

मयनामोती उजान गांगे शन-शनाइया जाय, हाय रे

कोन बा देशे उजान बाइया जाय रे।।

टिप्पणी

सारी गान (बंगाल)

स्वरलिपि ताल – दद्रा (6 मात्रा)

स्थायी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
रू	प	सी	नो	दी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	ग	–	–	–
सु	जा	न	मा	झी	र	ना	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	नि	नि	ध	–	प	म	म	ग
त	र	त	रा	इ	या	जा	ऽ	य	हा	य	रे
सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	प	प	ध
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	रे

अंतरा

X			0			X			0		
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	प	–	ध
हे	इ	सा	मा	लो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	–	–	–	–
ता	गो	द	दि	या	ऽ	बाइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नि	–	रें	सां	सां	सां	नि	नि	सां	नि	ध	प
फू	ऽ	ल	मो	ती	र	के	रा	ऽ	मो	ती	ऽ
प	प	प	नि	ध	–	प	प	म	म	ग	रे
उ	इ	ड़ा	ऽ	दे	ऽ	खा	इ	यो	हा	य	रे

टिप्पणी

सा	–सा	सा	रे	ग	–	सा	सा	सा	रे	ग	ग
को	ऽन्	बा	दे	शे	ऽ	उ	जा	न	बा	इ	या
रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–	–	–	–
जा	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

X			0			X			0		
सा	सा	सा	सा	प	प	सा	सा	सा	सा	प	प
बु	ड़ा	ऽ	मि	यां	र	बे	टा	ऽ	रे	भा	ई
सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे	ग	–	–	–	–
का	इ	ला	चा	चा	र	ला	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	प	प	नि	ध	ध	प	म	ग	ग
जा	ऽ	न	दि	या	ऽ	बा	इ	यो	रे	मो	न
सा	सा	सा	रे	ग	ग	रे	सा	–			
फू	इ	ला	बु	के	र	छा	ती	ऽ			

आभोग

X			0			X			0		
									प	–	ध
									आ	ऽ	रे
सां	सां	सां	सां	सां	–	सांसां	सां	ध	–	–	–
बो	इ	ठा	मा	रो	ऽ	हेइ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

इसी प्रकार अन्तरे की तरह गाये जाएंगे।

पाठगत प्रश्न 6.4

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. सारी गान ..... तथा ..... का एक प्रचलित लोकगीत है।
2. सारी गान ..... गति में गाया जाता है।
3. सारी गान में ..... तथा ..... का संगति वाद्य के रूप में प्रयोग होता है।

टिप्पणी

(ङ)

लोकगीत (छत्तीसगढ़)

इस गीत के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है। गीत का गायन कोई व्यक्ति विशेष नहीं करता बल्कि कोई भी जाति के स्त्री या पुरुष समूह में गाते हैं। इस गीत को छत्तीसगढ़ राज्य बनने के पूर्व से ही गाया जाता रहा है। इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने में वहाँ की नदियाँ, पहाड़ खेत, खलिहानों का विशेष वर्णन है तथा कुछ मुख्य जिलों का वर्णन है। उक्त बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

स्थायी

अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार
इन्द्रावती हा पखारे तोर पईयाँ
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां
महुं बिनती करनवा तोरे भुईयां

1. सोहे बिंदिया सही घाटे डोंगरी पहाड़
चंदा सूरूजै बनै तोर नैना
सोनहा धान से अंग लुगरा हरियर हे रंग
तोरे बोली हावै सुघर नैना
अचरा तोरे डोलावै पुरवइया
महुं पांव पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ भुईयां

2. रइगढ़ हावे सुहार तोरे मंऊरे मुकुट
सरगुजा अऊ बिलासपुर हे बैहा
रइपुर कनिहा सही घाटे सुघर हवे
दुरूग बस्तर सोहे पैजनिया
नांदेगावे नवागढ़ धनिया
महुं पावे पड़व तोरे भुईयां
जय हो जय हों छत्तीसगढ़ भुईयां

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी **ताल : रूपक**

(7 मात्रा)

X			2		3	
			ध़	सा	सा	–
			अ	र	पा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
पै	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	के
रे	सा	–	ध़	सा	सा	–
धा	ऽ	र	म	ऽ	हा	ऽ
रे	म	–	म	–	–	ग
न	हो	ऽ	हे	ऽ	ऽ	अ
रे	सा	सा	ग	–	प	–
पा	ऽ	र	इं	ऽ	न्द्रा	ऽ
ध	ध	–	ध	–	–	ध
व	ती	ऽ	हा	ऽ	ऽ	प
<u>नि</u>	ध	–	प	ग	<u>नि</u>	ध
खा	रे	ऽ	तो	ऽ	ऽ	रे

X			2		3	
प	<u>नि</u>	ध	प	–	म	ग
पै	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
रे	सा	–	सा	–	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भुं	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
सा	–	रे		–	प	–	–
म	ऽ	हुं		ऽ	बि	न	ऽ
म	प	ध		प	–	म	ग
ती	ऽ	ऽ		क	रं	व	ऽ
–	रे	–		ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे		ऽ	भु	ई	ऽ
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-1

				ग	प	प	–
				सो	ऽ	हे	ऽ
ध	सां	–		सां	–	–	नि
बिं	दि	ऽ		या	ऽ	ऽ	स
X				2		3	
ध	प	–		ग	–	प	–
ही	ऽ	ऽ		घा	ऽ	ट	ऽ
ध	नि	–		ध	–	–	प
डों	ग	ऽ		री	ऽ	ऽ	प

टिप्पणी

प	–	–		ग	–		प	–
हा	ऽ	ड़		चं	ऽ		दा	ऽ
ध	ध	–		ध	–		–	ध
सू	रु	ऽ		जै	ऽ		ऽ	ब
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
नैऽ	ऽऽ	ऽ		तो	ऽ		ऽ	रे
प	ध	–		प	–		म	ग
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
ऽ	ऽ	ऽ		सो	न		हा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
धा	ऽ	ऽ		न	ऽ		ऽ	से
रे	सा	–		ध	सा		सा	–
अं	ग	ऽ		लु	ग		रा	ऽ
रे	म	–		म	–		–	ग
ह	रि	ऽ		य	र		हे	ऽ
रे	सा	सा		ग	–		प	–
रं	ग	–		तो	ऽ		रे	ऽ
X				2			3	
ध	–	–		ध	–		–	ध
बो	ऽ	ऽ		ली	ऽ		ऽ	हा
निध	पग	–		ग	नि		ध	नि
वेऽ	ऽऽ	ऽ		सु	ऽ		घ	र
प	ध	–		प	–		–	–
नै	ऽ	ऽ		ना	ऽ		ऽ	ऽ

टिप्पणी

ग	प	प	–	ध	सा	–	
अ	च	रा	ऽ	तो	ऽ	ऽ	
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–	
रे	ऽ	ऽ	डोऽ	ला	व	य	
ध	–	प	–	प	नि	ध	
पु	ऽ	र	ऽ	व	ई	ऽ	
प	–	म	म	ग	रे	सा	
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
सा	–	रे	–	प	–	–	
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	
प	ध	–	–	प	म	ग	
व	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ	
–	रे	–	ग	–	रे	–	
तो	ऽ	रे	ऽ	भु	ई	ऽ	
–	सा	–					
यां	ऽ	ऽ					

अंतरा-2

X			2		3		
			ग	प	प	–	
			र	इ	ग	ढ़	
ध	सां	–	सां	–	–	नि	
हा	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	सु	
ध	प	–	ग	–	प	–	
घ	र	ऽ	तो	ऽ	रे	ऽ	

टिप्पणी

ध	नि	–	ध	–	–	प	
म	ऊं	ऽ	रे	ऽ	ऽ	मु	
प	–	–	ग	–	प	–	
कु	ट	ऽ	स	र	गु	ऽ	
ध	ध	–	ध	–	–	ध	
जा	ऽ	ऽ	अऊ	ऽ	ऽ	बि	
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि	
लाऽ	सऽ	ऽ	पु	र	हे	ऽ	
प	ध	–	प	–	म	ग	
बै	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	
रे	सा	सा					
ऽ	ऽ	ऽ					
X			2		3		
1	2	3	4	5	6	7	
			ध़	सा	सा	–	
			र	इ	पु	र	
X			2		3		
रे	म	–	म	–	–	ग	
क	नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	स	
रे	सा	–	ध	सा	सा	–	
ही	ऽ	ऽ	घा	ऽ	ट	ऽ	
रे	म	–	म	–	–	ग	
सु	ऽ	ऽ	घर	ऽ	ऽ	हा	
रे	सा	सा	ग	–	प	–	
वे	ऽ	ऽ	दु	ऽ	रु	ग	

टिप्पणी

ध	–	–	ध	–	–	ध
ब	ऽ	स्‍	तर	ऽ	ऽ	सो
निध	पग	–	ग	नि	ध	नि
हेऽ	ऽऽ	ऽ	पै	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	–	–	–
ज	नि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
ग	प	प	–	ध	सां	–
नां	ऽ	दे	ऽ	गां	ऽ	ऽ
सां	–	–	रेंसां	नि	–	–
वे	ऽ	ऽ	नऽ	वा	ऽ	ऽ
ध	–	प	–	प	नि	ध
ग	ऽ	ढ़	ऽ	ध	नि	ऽ
प	–	म	म	ग	रे	सा
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X			2		3	
सा	–	रे	–	प	–	–
म	ऽ	हुँ	ऽ	पा	ऽ	ऽ
प	ध	–	–	प	म	ग
वे	ऽ	ऽ	प	ड़	व	ऽ
–	रे	–	ग	–	रे	–
तो	ऽ	रे	ऽ	भुं	ई	ऽ
–	सा	–	सा	–	रे	–
यां	ऽ	ऽ	जय	ऽ	हो	ऽ

टिप्पणी

प	–	–		प	ध	–	–
जय	ऽ	ऽ		हो	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग		–	रे	–	ग
छ	त्ती	स		ऽ	ग	ऽ	ढ़
–	रे	–		–	सा	–	–
ऽ	भु	ई		ऽ	यां	ऽ	ऽ
–	–	–		–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पाठगत प्रश्न 6.5

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. ''अपरा पैरी के धार'' गीत के उद्देश्य को संक्षेप में लिखिए।
2. दिए हुए छत्तिसगढ़ के लोकगीत की पार्श्वभूमि को संक्षेप में लिखिए।
3. इस लोक गीत को कौन गाता है?

(च)

राजस्थानी लोकगीत

यह राजस्थानी लोकगीत है। यह गीत प्राय: कालबेलियों के द्वारा पारम्परिक मेलों में गाया जाता है। यह राजस्थान के प्रचलित लोकगीतों में से एक गीत है। नाग पंचमी, वीर पुरी तथा गोगा नवमी पर भी यह गीत गाया जाता है। गीत के साथ नृत्य भी किया जाता है। यह एक श्रृंगार रस गीत है। राजस्थान के हर शहर व गांवों में इसका प्रचार प्रसार है।

यह गीत प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीनकाल में राजा महाराजा इसे अपने मनोरंजन के लिए सुना करते थे। तथा आज भी यह नई पीढ़ी के लिए मनोरंजन का प्रतीक है।

कालबेलिया हिन्दुओं के सभी तीज त्यौहार और मेले मनाते हैं। यह गीत विशेष तौर पर मेले में गाया जाता है। यह गीत पूरे भारत तथा देश-विदेशों में प्रचलित है। प्रस्तुत गीत के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

सोने री धरती जठै चाँदी रो आसमान
रंग रंगीलो रस भरीयो म्हारो प्यारो राजस्थान।

स्थायी

अररररररर.........र

रे कालियो कूद पड़्यो मेला में,
साइकल पन्चर कर लायो
अररररर.........र

1. जयपुर जाइजे कबजो लाइजे,
   कबजो लाल बूटी को...
   अररररर.........र

2. दो दिन डब जा रे डोकरिया
   छोरी म्हारी बाजरियो काटे
   अररररर.........र

टिप्पणी

3. रे घोडी छप्परे मे छुप जा रे,
छोरी तनै लेबाणो आयो।
अरररररर.....र

4. रे काजल टीकी के नखरे में,
छोरी म्हारी मर मत जाइजे रे,
अरररररर.....र

5. रे छोरी झटक मटक मत चाल
कमर में लचको पड़ जासी
अरररररर.....र

रे कालियो कूद पड़ियो मेला में....
साइकल पन्चर कर लायो.....
अरररररर.....र

स्वरलिपि

ताल - कहरवा

(8 मात्रा)

गंगं	गं	रें रें रें	गं – – गंगं	पं गं पं गं	रे –	गं रें गं रें निध निध प
सोने	री	ऽ ध र	ती ऽ जठे चांदी	रो ऽ ऽ ऽ	आस्	मा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ न
रेंरें	रें –	रें नि	रें रें – सं	– सं –		गं रं सां
रंग	रंगीले	ऽ ऽ	रस भरी	म्हारो थारो		रा जा स्थान

स्वरलिपि

स्थायी

X				0				X				0			
सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	सां
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	क	ऽ	लि	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	–	ध	प	–	–	–
कू	ऽ	ऽ	द	प	ऽ	डि	ऽ	यो	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ

X				0				X				0			
प	–	–	–	–	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ऽ	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	साऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ल
ध	–	–	–	–	–	सां	–	–	–	–	–	ध	–	–	–
पन्	ऽ	ऽ	ऽ	च	ऽ	र	ऽ	क	र	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
अ	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ	र	ऽ

सभी अंतरों की स्वरलिपि स्थायी के समान है।

पाठगत प्रश्न 6.6

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. यह गीत ..... के प्रचालते लोकगीतों में से एक है।
2. इस गीत के साथ ..... भी किया जाता है और यह ..... रस का गति है।
3. यह गीत विशेष रूप से ..... में गाया जाता है।

आपने क्या सीखा

1. इस लोकगीत के पाठ में जनसाधारण तथा जनजाति के लोगों की शैली तथा पृष्ठ भूमि को बताया है।
2. गढ़वाली लोक गीत उत्तरांचल के मेलों तथा पर्वों में गाए जाते हैं।
3. दिया हुआ हरियाणवी लोकगीत हर मौसम तथा अवसर पर गाया जाता है।
4. यह गीत ''जिंदुआ'' के नाम से प्रचलित है।
5. सारीगान, बंगाल तथा बंगलादेश का एक प्रचलित लोकगीत है।
6. छत्तीसगढ़ के लोकगीत का विषय छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान है।
7. राजस्थान का लोकगीत प्राय: पारम्परिक मेलों में गाया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. गढ़वाली लोक-गीत की पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

2. हरियाणा के लोकगीत की आठ पंक्तियाँ लिखिए।
3. पंजाब के लोक गीत ''जिंदुआ'' का उद्देश्य समझाईए।
4. ''सारीगाना'' की पृष्ठ भूमि को लिखिए तथा संगति के वाद्यों के नाम लिखिए।
5. छत्तीसगढ़ तथा राजस्थान लोकगीतों की तीन विशेषताओं को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. मेले, पर्व
2. युवक, युवती
3. तुकबंदी

6.2

1. ज्ञानी अथवा विद्वान व्यक्ति को अगर कोई अच्छी बात बताई जाए, तो वह उसे ठीक से अमल में लाकर उसका फायदा उठाता है, लेकिन मूर्ख व्यक्ति को अच्छी शिक्षा बारबार भी दी जाए, तो वह उसे ठीक से नहीं अपनाता है।
2. हर मौसम तथा हर उत्सव पर
3. सामाजिक तथा शिक्षाप्रद गीत

6.3

1. (i) जिंदुआ
2. (ii) आग का पेड़
3. (iii) पंजाबी भाषा

6.4

1. पश्चिम बंगाल, बंगलादेश
2. द्रुत
3. दोतारा तबला

6.5

1. छत्तीसगढ़ की महिमा का बखान किया गया है।

टिप्पणी

2. इसमें छत्तीसगढ़ की शोभा बढ़ाने वहाँ की नदियां पहाड़, खेत खलिहानों का विशेष वर्णन है, तथा कुछ मुख्य जिलां का वर्णन है।

3. इस लोक गीत को किसी भी जाति के स्त्री या पुरुष, समूह में गाते हैं।

6.6

1. राजस्थान

2. नृत्य, श्रृंगार

3. मेले में

7

राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान

'वंदेमातरम्' 1882 में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया भारत का राष्ट्रीय गीत है। मूलत: यह बांग्ला एवं संस्कृत दो भाषाओं में था। राष्ट्रीयगीत किसी भी राष्ट्रीय अवसार पर गाया जाता है। इस गीत ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित किया। सर्वप्रथम इसे 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक राजनैतिक सभा में गाया गया। कुछ आधिकारिक निर्देशों को छोड़कर इस गीत का दर्जा राष्ट्र गान के समान है। 'वंदेमातरम्' का नारा देश की स्वतंत्रता के संघर्ष के समय राष्ट्रीय आंदोलकारियों व नेताओं का मूल मंत्र था। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास आनन्द मठ' में यह रचना उल्लेखित है।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान की पृष्ठ भूमि का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के बोलों का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगान गाते समय उसके नियमों का वर्णन कर सकेंगे;
- राष्ट्रगान को उचित लय और ताल में गा पायेंगे।

''वंदेमातरम्''

शब्दकार–बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्!!
सुजलां सुफलां, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्; वन्दे मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्ल-कुसुमितां-द्रुम-दल शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!!

टिप्पणी

वन्दे मातरम्

ताल–कहरवा

स्थायी

x		0		x		0		x		0		x		0	
सा	रे	–म	पम	प	–	–	–	म	प	–नि	सांनि	सांसां	–	–	–
व	न्दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	व	न्दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ
सारें	निऽ	धप	–प	पध	म	गरे	–रे	रेप	मम	गरे	–ग	सा	–	–	–सा
सुज	लाऽ	ऽऽ	ऽम	सुफ	ला	ऽऽ	ऽम्	मल	यज	शीऽ	ऽत	ला	ऽ	ऽ	ऽम
सा	रेम	पम	प	–प	निध	प	–	म	प	–नि	सांनि	सां	–	–	–
श	स्यश्या	ऽम्	लां	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	वं	दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

x		0		x		0		x		0		x		0	
म	प	नि	नि	निनि	सांनि	सां	–नि	सां	–	नि	निनि	संनि	सां	सारें	सानि
शु	भ्र	ज्यो	त्स्ना	पुल	कित	या	ऽमि	नीम्	ऽ	फु	ल्लकु	सुमि	त	द्रुम	दल
	सां	ध													
निध	निध	प	–	रेरे	मग	रे	–	रेनि	धनि	धप	–ध	प	–	मप	नि
शोऽ	ऽभि	नीम्	ऽ	सुहा	ऽसि	नीम्	ऽ	सुम	धुर	भाऽ	ऽष	णीम्	ऽ	सुख	दां
निनि	नि	–नि	सांनि	सां	–	म	प	–नि	सांनि	सां	–	–	–	म	प
वर	दां	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	वं	दे	ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	वं	दे
–नि	सांनि	सां	–	–	–										
ऽमा	ऽत	रम्	ऽ	ऽ	ऽ!!										

पाठगत प्रश्न 7.1

1. वंदेमातरम ..... गान है।
2. राष्ट्रगान दो भाषाओं में पाए जाते हैं ..... तथा ..... ।
3. वंदेमातरम गीत भारतीय स्वतंत्रता को ..... किया। सर्व प्रथम ..... कांग्रेस की सभा में गाया गया।

राष्ट्रगान

(जन गण मन अधिनायक)

भारत का राष्ट्रगान भारतीयों द्वारा विशिष्ट अवसरों पर गाया जाता है। राष्ट्रगान के प्रारंभ में 'जन गण मन' एवं अंत में 'जय हे' गाया जाता है। राष्ट्रगान की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने संस्कृत मिश्रित बंगाली में की है। राष्ट्रगान के बोल तथा संगीत दोनों ही सन् 1911 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने तैयार किये। संविधान सभा में जन गण मन के पहले छंद को 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया है।

जन गण मन अधिनायक जय हे

–रवीन्द्र नाथ टैगौर

भारत भाग्य विधाता
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक, जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे।।

टिप्पणी

''जन गण मन अधिनायक''

ताल-कहरवा

स्थायी

x				x				x				x			
								सा				ग			
सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	रे	ग	म	–
ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
म								सा							
ग	–	ग	ग	रे	–	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	सा	–
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
सा										प	मं			ध	
प	–	प	प	–	प	प	प	प	–	प	मं	प	मं	प	–
जा	ऽ	ब	सि	ऽ	न्धु	गु	ज	रा	ऽ	त	म	रा	ऽ	ठा	ऽ
								ग							
म	–	म	म	म	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
द्रा	ऽ	वि	ड़	उ	ऽ	त्क	ल	बं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा								रे				प			
ग	–	ग	ग	ग	–	ग	रे	प	प	प	म	म	–	म	–
वि	ऽ	न्ध्य	हि.	मा	ऽ	च	ल	य	मु	ना	ऽ	गं	ऽ	गा	ऽ
				ग				सा							
ग	–	ग	ग	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	–	–
उ	ऽ	च्छ	ल	ज	ल	धि	त	रं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
								म							
ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	म	रे	ग	म	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	ना	ऽ	में	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
मं				म				म							
ग	म	प	प	प	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	आ	ऽ	शि	श	मा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

टिप्पणी

x				x				x				x			
सा								रे							
ग	–	ग	–	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	सा	–	–	–	–	–
गा	ऽ	हे	ऽ	त	व	ज	य	गा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा												प		ध	
प	प	प	प	प	–	प	म	प	–	प	प	म॑	ध	प	–
ज	न	ग	ण	मं	ऽ	ग	ल	दा	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
				ग				ग							
म	–	म	म	म	–	ग	गम	रे	म	ग	–	–	–	नि	नि
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	विऽ	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
दि								ध							
सां	–	–	–	–	–	नि	ध	नि	–	–	–	–	–	प,	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
ध	–	–	–	–	–	–	–	सा	सा	रे	रे	ग	ग	रे	ग
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ज	य	ज	य	ज	ज
म	–	–	–	–	–	–	–								
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

पाठगत प्रश्न 7.2

1. राष्ट्रगान के आरम्भिक स्वरों को लिखिए।
2. राष्ट्रगान के रचयिता कौन थे?
3. कविता में कौन-सा पद संविधान में राष्ट्रगीत के लिए चुना गया है?

आपने क्या सीखा

1. ''वन्दे मातरम्'' भारत का राष्ट्रगीत है, जिसे बंकिमचंद्र चटोपाध्याय ने लिखा है।
2. राष्ट्रगीत को किसी भी राष्ट्रीय अवसर पर गाया जाता है।
3. स्वतंत्रता संग्राम के लिए जूड़ाने वाले क्रांतिकारी एवं नेत्तत्व करने वाले नेताओं के लिए ''वन्देमातरम्'' एक मन्त्र है।
4. ''जन गण मन'', भारत का राष्ट्रगान है।
5. राष्ट्रगान की रचना कवि रविंद्रनाथ टैगोर ने संस्कृत मिश्रित बंगाली में रचना की है।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. राष्ट्रगीत की पार्श्वभूमि का उद्देश्य लिखिए।
2. राष्ट्रगान के विषय में संक्षेप में लिखिए।
3. राष्ट्रगान के पद को लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. राष्ट्रगीत
2. बंगाली, संस्कृत
3. प्रेरित, राष्ट्रीय

7.2

1. जन गण मन
2. कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर
3. प्रथम पद